शून्याकाश

"व्यापक ~~शुन्याकाश~~ में स्थित अनन्त ब्रह्माण्डों में से एक ब्रह्माण्ड के" अंगभूत इस पृथ्वी पर, वर्तमान में पाये जाने वाले मानव अत्यन्त सौभाग्यशाली हैं, क्योंकि उनको ह्रास और विकास का अध्ययन एवम प्रयोग करने का स्वर्णिम अवसर व साधन प्राप्त है।

~~[illegible]~~ → विगत में बहुत सारे प्रयास हुए। मानव स्वयं को पहचानने तथा व्यवस्था के निर्माण के उद्देश्य से बीच में "ईश्वर" को लाया। जिसके फलस्वरूप "ईश्वर केंद्रित चिन्तन ज्ञान" का उदय हुआ। इसी के आधार पर ईश्वर को केन्द्र मानकर हर बातों में हम सत्य को खोजने लगे। इस प्रयास में अनेकोनेक विभूतियों ने अपने को प्रयोग किया, अर्पित किया। ख्याति भी पायी। जिन्हे आज हम आदर्श पुरुष के रूप में मानते हैं। ये श्रेष्ठ महापुरुष मुख्यत: भक्तिवादी या विरक्तवादी चरित्र के थे। परन्तु ये किसी व्यवस्था या क्रमबद्ध मार्ग को जन्म नहीं दे पाये अपितु व्यक्तिकेंद्रित होकर रह गए। व्यवस्था के नाम पर जाति, पंथ, सम्प्रदाय का निर्माण हुआ, जो आज भी मानव को कट्टरता, टकराव एवं अलगाव की ओर ले जा रही है। सुधारवादियों के सुधार से भी स्थिति बदली नहीं बल्कि आदर्शवाद "रहस्य" से गहराता गया और मानव भ्रमित होता गया।

दूसरी बार मानव स्वयं को पहचानने एवं व्यवस्था निर्माण के उद्देश्य से "वस्तु" को बीच में लाया। शरीर को "मैं" मान लिया। जिसका परिणाम है आज की भौतिकवादी सभ्यता। जिसे हम गर्व से "विज्ञान युग" कहते हैं। आज वस्तु ही सबकुछ हो गई, मानव गौण हो गया। वर्तमान युग में मनुष्य ने यांत्रिकता तथा इसके आश्रित व्यवस्था को ही विकास माना है। यदि इसे विकास होना मान भी लिया जाय तो मानव में परस्पर सहयोग, सहकार तथा विश्वास की भावना का भी विकास होना चाहिए तथा पुरे मानव समाज को उत्तरोत्तर एक अखण्ड इकाई की ओर इसे गतिशील होना ही चाहिए पर ऐसा देखने में नही आता अपितु यांत्रिक और भौतिक "समृद्धि" के कारण मानव का विखण्डन ही देखने में ~~नहीं~~ आता है ~~अपितु यांत्रिक और भौतिक समृद्धि के कारण का~~ —

इस वस्तु मूलक चिन्तन ज्ञान के फलस्वरूप हम अवश्यकता से सुविधा, सुविधा से भोग, भोग से अति भोग और बहुभोग की ओर चल दिये। यह भी सर्वविदित है कि भोग, अति, बहु-भोग व्यक्तिवादी होता है। अत: यह भी एक सार्वभौम —

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

सामाजिक व्यवस्था को जन्म नही दे पाया, अपितु विज्ञान ने मानव को चकाचौंध अवश्य किया है। वह रहस्यवाद से निकलने को छटपटा रहा ही था, भौतिकवाद की ओर आँख मूंद कर बढ़ता ही गया। एक उपकार जो विज्ञान से हुआ कि दूरी कम हुई है। परन्तु दूरी के घटने मात्र से मनुष्य में कोई गुणात्मक परिवर्तन नही मिला। वस्तु के साथ भी यही देखने में आया, कि जहाँ उपयोग में लाया, विकास के स्थान पर ह्रास ही पाया।

आज दोनों के अर्थात्, आदर्शवाद तथा भौतिकवाद के समन्वय के प्रयास चल रहे हैं। परन्तु दो गलती मिलकर — एक सही नही होती। फलस्वरूप आज की वर्तमान स्थिति। जिसका मूल्यांकन हम स्वयं कर सकते हैं। आश्चर्य! हमने कभी मानव को केन्द्र बिन्दु बना कर नही देखा। जब कि बात सदैव हम सामाजिकता की करते रहे, लक्ष्य हमारा सदैव मानवता ही रहा। उपरोक्त दोनो चिन्तनों का दृष्टा मानव ही मिलता है फिर भी मानव को आधार नही बनाया। ज्ञान के धारक, वाहक के रूप में मानव प्रमाणित हो जाता है, यदि मानव को बीच में लाते तो हमे कुछ भी जोड़ना घटना नही पड़ता।

एक आधारभूत सच्चाई तो यह है कि अभी तक मानव परम्परा की, सामाजिकता की या सार्वभौम मानव व्यवस्था की स्थापना हो ही नही पायी। आज तक भी हम यह जान नही पाये कि मानव वास्तव में क्या है। अभी समग्रता से मानव का अध्ययन होना बाकी है। संसार गवाह है कि भय और प्रलोभन से सारा कार्यक्रम चलता आया। जब तक राजनीति तथा धर्म मे ~~[illegible]~~ जुड़ाव रहा, गाड़ी ठीक-२ चलती रही। परन्तु आज सारी व्यवस्थाएं जिनका आधार मानव नही था चरमरा गई हैं। हम ढोते जा रहे हैं। पर कब तक यही स्थिति चलती रहेगी? पृथ्वी ~~की~~ में सबसे विकसित ~~प्राणी~~ इकाई होने के नाते आज "समय" हमसे कोई जवाब चाह रहा है। चिन्तन अवश्यम्भावी है। अस्तित्व में जो विकास है वह पूरा होने तक निरन्तर प्रयास, प्रयोग तथा सतत् अभ्यास चलता ही रहेगा।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

अस्तित्व मूलक मानव केंद्रित चिन्तन ज्ञान →

अस्तित्व में यह देखा गया, कि सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड पूर्णतया व्यवस्थित है तथा एक क्रमबद्ध विकास की ओर अग्रसर है। अस्तित्व में जब सभी के लिए व्यवस्था है तो इस अस्तित्व के सबसे विकसित जीवन अर्थात मानव के लिए भी कोई क्रमबद्ध मार्ग होना चाहिए, जिस पर चल कर सम्पूर्ण मानवता अपने लक्ष्य तक पहुँच सके। इसी चिन्तन के फलस्वरूप यह दर्शन है जिसे हम "मध्यस्थ दर्शन" या सहअस्तित्व वाद के रूप में जानते हैं। यह दर्शन मानव को उसकी दिव्यता तक पहुँचने का क्रमबद्ध मार्ग ~~प्रकाशित~~ प्रशस्त करता है। चूँकि सम्पूर्ण मानवता के लिए है अतः सार्वभौम है। हम जहाँ हैं वहीं से इस यात्रा को ~~सुरू~~ शुरू कर सकते हैं। हम अनुभव द्वारा यह जानते हैं कि मनुष्य जड़ एवं चैतन्य का संयुक्त रूप है जो अस्तित्व में है। इस चिन्तन की मूलभूत विशेषता इसकी प्रामाणिकता है, जो हर कदम पर प्रमाण सहित आगे बढ़ने का निर्देश देती है। चूंकि मानव केंद्रित है अतः हम स्वयं मे इसे प्रामाणित या अनुभव कर सकते हैं। यह एक उपलब्धि सहित साधना विधि है जिससे मानव एक ही शरीर यात्रा मे अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है।

यह संसार अकेले व्यक्ति का ~~क~~ कार्यक्रम नही है। एक, दो या दस के पूर्णता प्राप्त करने से काम नही चलेगा, सम्पूर्ण मानव समाज को इस ओर जाना होगा। परन्तु आजतक कोई व्यवस्था नहीं बन पाई जिससे यह सम्भव हो ~~न~~ पाता। चूंकि ~~यह~~ यह दर्शन ~~सह अस्तित्व~~ सह-अस्तित्व पर आधारित है अतः यह एक सम्पूर्ण व्यवस्था या अखण्ड ~~क~~ मानव समाज का निर्माण करती है एक मानव परम्परा का आधार रखती है। संगठन तो पदार्थ का धर्म है, मानव का स्वभाव तो समाजिकता है जो ~~क~~ एक दूसरे की पूरकता में है।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

जीवन विद्या → यह "मध्यस्थ दर्शन" की एक जागृति विधि साधना पद्धति है।

यदि आपको यह बता दिया जाये

कि आप क्या हैं?

आप कहाँ हैं?

तथा आप को कहा जाना है? तो आपका मार्ग सरल हो जाता है। आपको समाधान मिल जाता है। मानव को उसके लक्ष्य तक ले जाने वाली यह क्रमवद्ध जागृति है जिसके द्वारा आप स्वयं अपना मूल्यांकन कर जाग्रत हो सकते हैं।

पात्रता →

आनन्द ही जीवन है। सुख, शांति, संतोष एवं आनन्द मानव का धर्म है। हमारे जीवन की प्रत्येक क्रिया इसी लक्ष्य से अभिप्रेत है परन्तु वर्तमान परिस्थिति में यह देखा गया कि मानव अपने इस लक्ष्य से दूर होता जा रहा है। निराशा, कुंठा एवं दुख से वह घिरता जा रहा है।

कहते हैं मानव कल्पवृक्ष है वह जो इच्छाएं करता है पूरी हो जाती हैं। इस वर्तमान से यदि आप असन्तुष्ट हैं तथा आपको इससे बाहर निकलने की इच्छा है तो आप पात्र हैं और "जीवन विद्या" में सादर आंमत्रित हैं।